eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

लोक और लोक संगीत

[1]डा0 दीपाली श्रीवास्तव
[1]सह प्रोफेसर, (संगीत विभाग) महिला महाविद्यालय पी0जी0 कालेज कानपुर, उ0प्र0

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

लोक संगीत का अलोक संगीत शब्द में लोक और संगीत दो अलग–अलग शब्द है। हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से लोक संगीत हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से लोक संगीत एवं समस्त पद है। लोक तथा संगीत एक समस्त पद है। लोक तथा संगीत के बीच तत्पुरूष कारक की षष्ठी विमक्ति करके लोप हो जाने से लोक संगीत शब्द का अर्थ हुआ लोक का संगीत। अर्थात लोक संगीत की सबसे सार्थक व्याख्या यही हो सकती है कि यह लोक या लोग या जनमसनस का संगीत है। लोक द्वारा सृजित लोक द्वारा रक्षित, लोकरंजन के लिय, लोक जिबहाओं द्वारा गाया जाने वाला संगीत होता है। लोक मानस की किसी भी अनुभूति की अभिव्यति के लिए स्वरताल तत्व के आश्रय से ही लोक संगीत का जन्म होता है। लोक संगीत की महिमा बताते हुए कहा गया है। कि मनुष्य नौ प्रकार के रसों से भवावित होकर जब स्वाभाविक रूप से गाकर, बजाकर अथवा नाचकर अपने भावों को प्रकट करता है तो उसे लोक संगीत कहते है।

मुख्य शब्दः– लोक, लोक संगीत, लोक द्वारा रक्षित, लोकरंजक।

Introduction

लोक संगीत लोकमानस की भावनाओ और उसकी तरंगो से उत्पन्न संगीत कहा जा सकता है। यह ठीक है कि कोई भी रचना व्यक्ति विशेष के ही माध्यम से होती है, लेकिन जब उस रचना के रचनाकार का या गायक का नाम महत्वपूर्ण ना रहकर उसका काम महत्पूर्ण हो जाता है तो वह रचना या गायिकी लोक संगीत बन जाती है। इस प्रकार लोक संगीत का जन्म लोक मानस से हुआ है और लोक मानस का इतिहास उतना पुराना है जितना कि मनुष्य का जन्म। इस दृष्टि से लोक लोकसंगीत का जन्म भी मनुष्य के जन्म की तरह पुरातन है।

लोक तीन मुख्य विशेषताएं हो सकती है।

(क) लोक निर्मित होना चाहिए।

(ख) लोक प्रचलित होना चाहिए।

(ग) लोक विषयक होना चाहिए।

इस प्रकार लोक संगीत का जन्म लोक के जन्म के साथ ही कहा जा सकता है। इसकी ध्वनियो मे, इसके स्वरो मे, लय मे इसकी गायिकी मे, लोक हृदय मे, उमडने घुमडने वाली संवेदनाओ, सुख – दुखः, हर्ष –विषाद , पीडा–प्रसन्नता, यहाँ तक की लोक हृदय की धडकनो का स्पनन्दन

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

होता है। यह संगीत चूँकि लोक के साथ जन्म है, इसलिए इसका जन्म शास्त्रीय संगीत से भी पुराना है। शास्त्रीय संगीत ने भी इस गीत से अनेक प्रकार की प्रेरणाये ग्रहण करके अपने नियमो का निर्माण किया है। वास्तव मे लोक संगीत की लहरी संगीत की सप्तस्वरी लहरी का आधार कही जा सकती है। लोक मानस से उद्भूत यह संगीत लोक के साथ ही अपने जन्म की सार्थकता की घोषणा करते हुए सुनायी पडता है। लोक संगीत सहज ग्राह्य होने के कारण[1] शीघ्रता से हर उम्र के इन्सान को आकर्षित करता है। जीवन से जुडी हुई स्थितियां जब लोक गीतो के माध्यम से फूट पडती है, तो वे अनायास रस की वर्षा करने लगती हैं। लोक संगीत मे धुन छोटी होती है। किन्तु शब्दो का अर्थ विशाल होता है इसीलिए लोक संगीत मनुष्य को अधिक आकर्षित करता है। जन्म से मृत्यु तक के गीत इतनी स्वच्छंदता पूर्वक होते है कि मनुष्य अपने समाज और मिट्टी से अनायास ही जुड जाता है। व्यक्ति और समाज के सुख तथा दु:ख का प्रतिबिम्ब लोक संगीत है। यह सगीत मन और मस्तिष्क पर पूरा प्रभाव डालता है। भावो की सनातनता के कारण लोक संगीत कभी पुराना नही पडता, यह तो सदाबहार रहता है। लोक संगीत दो शब्दो से मिलकर बना है। 'लोक और संगीत' इसका सामान्य अर्थ है, लोगो का संगीत।

'लोक' शब्द की व्याख्या – ऋग्वेद मे 'देहि लोकम्' शब्द प्रयुक्त हुआ है 'लोक' शब्द का अर्थ स्थान से है। 'गीता' मे लोक शस्त्र तथा लौकिक आचारो की महत्ता स्वीकार की गई है। सम्राट अशोक के शिलालेखों मे लोक कल्याण के आदेश मिलते है, परन्तु अब 'लोक' शब्द का प्रयोग परम्परा का रक्षक , सहेजने वाला आदि के अर्थ से लिया जाता है। इस शब्द लोक मे नागरिक एवं ग्रामीण दोनो संस्कृतियो का समन्वय है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नही है बल्कि नगरो और ग्रामो मे फैली हुई समूची जनता से है, जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथिया ँनही" 1

डॉ0 सत्येन्द्रने लोक शब्द की परिभाषा मे कहा है कि – "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य सरकार, शास्त्रीयता और पंडित्य चेतना तथा अहंकार से शून्य है जो परम्परा के गवाह मे जीवित रहता है।"2

लोक संगीत का शादिब्क अर्थ :–

आदिम जाति मे वे सभी व्यक्ति 'लोक' होते है, जिसे अंग्रेजी भाषा मे 'फोक' कहा जाता है। यदि इस शब्द का विशदत्तम अर्थ लिया जाए तो इसका प्रयोग सभ्य राष्ट्र की समग्र जनसंख्या के लिये भी किया जाता है लेकिन आज पाश्चात्य सभ्यता की दृष्टि मे इस शब्द का साधारण प्रयोग ''फोक म्यूजिक'' (लोक –संगीत) नाम से प्रचलित है।

लोक संगीत की परिभाषा :– जिस प्रकार संगीत की परिभाषा के अन्तर्गत गायन वादन एवं नृत्य का समावेश है, उसी प्रकार लोक संगीत की व्यापक परिभाषा के अन्तर्गत लोकगीतो, लोकवाद्यो एवं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

लोकनृत्यो का समावेश है। यह तीनो परस्पर अलग–अलग होते हुए भी एक दूसरे पर आश्रित है। इस आधार पर अधिकतर लोक गीतो मे लोकवाद्यों का प्रयोग एवं नृत्य करना सम्भव है।

पं0 ओकारनाथ ठाकुर के अनुसार – ''लोक संगीत मे चराचर जगत गाता है और नृत्य करता है।''3

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार – ''आधुनिक जीवन को सुन्दर, समृद्ध व सम्पन्न बनाने के लिये लोक संगीत सहायक सिद्ध होगा।''4

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार – ''संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है लोकसंगीत'' 5

लोक और संगीत का सम्बन्ध

लोक का तात्पर्य है ''जन साधारण'' अमर कोशकार ने कहा है कि– ''लोकस्तु भुवने जने'' अतः लोकतंत्र को जनता का शासन कहा गया है। जनसाधारण मे जन समूह सम्मिलित माने जाते है जो विशिष्ट वर्ग से पृथक होते है अर्थात् सामान्य वर्ग के व्यक्ति जन साधारण की गणना मे आते हैं। उनके ज्ञान का आधार शास्त्र और उसकी भारी भरकम पोथियाँ नही होती, अपितु पूर्व प्रचलित परम्पराएँ और पीडी दर पीडी श्रतु ज्ञान होता है। समाज मे व्याप्तविश्वास, भावनाएँ, आदर्श ही इनकी जीवन धारा का निर्धारण करते है। इसलिए कृतिमता से दूर हृदय की निश्छल सरल धारा मे अवगाहन कर ये सहजता का रस पान करते रहते है। इसलिए इनका व्यवहार मानवीय प्रकृति और संवेगो के अनुरूप होता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास मे **आचार्य पं0 रामचन्द्र शुक्ल** ने कहा है कि ''भारतीय जनता का सामान्य स्वरूप पहचानने के लिए पुराने परिचित ग्राम गीतो की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, केवल पण्डितो द्वारा काव्य परम्परा का अनुशीलन ही अलम नही है, जब – जब शिष्टो का काव्य पण्डितो के द्वारा बाँधकर निश्चेष्ट और संकुचित होगा। तब – तब उसे सजीवता और चेतनाशीलता देश की सामान्य जनता के बीच स्वछन्द बहती हुई प्राकृतिक भाव धारा से जीवन तत्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगी।''6

लोक सहज निर्झर है, जो पर्वत के अंतस्तल को शीतल जलधारा का दान जगत को करता हैं। मनुष्य के भावो को नैसर्गिक निर्झार बिना किसी रूकावट के कल – कल ध्वनि करता हुआ निरंतर प्रवाहमान रहता है। लोक का सहज प्राकृतिक रूप से ग्रहण किये होता है। लोक रचनाकार लोक के उद्यम वेग को ज्यो की ज्यो आत्मसात् करके शालीनता की परिधि को स्वीकार न करता हुआ सहज रूप से अभिव्यक्ति प्रदान कर देता है। यह सहजता ही लोक – रचनाओ की सबसे बडी विशेषता है। लोक रचनाकार की मौज मस्ती और फक्कडपन उसकी रचनाओ मे सहज पगाप्त हो जाता है जबकि साहित्यकार शास्त्रीय नियमो मे बँधता सिमटता चलकर आगे पीछे कर सोचता हुआ शिष्टता का आवरण ओढकर अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है, जिसके फेर मे बहुत सी बार उसकी रचना का सैन्दर्य भी नष्ट हो जाता है। जो साहित्यकार भावना के समुद्र मे जितनी गहरी डुबकी लगाता है, उतनी ही कीमती रत्न उसके साहित्य मे प्राप्त हो जाते है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

जब कोई लोक रचनाकार ''चिरी तोय चामरिया भावै, घर मे सुन्दर नारि बलम पर नारी भावै'' गाा उठता है और उसे अपने आसपास के परिवेश का भी ध्यान नही रहता तो निश्चय ही वह भाव समुद्र मे डूबा होता है। लोक साहित्य मे हृदयगत भावनाओ का चाहे वह प्रेम हो, उल्लास हो, वेदना हो या श्रृंगार हो, क्रोध हो अथवा घृणा हो सभी का सहज रूप से प्रकाशन किया गया है। यह सहजता लोक साहित्य का दूसरा अनिवार्य ओर प्रभावशाली तत्व है। फिरंगी नल मत लगवावै, नलकौ पानी बहुत बुरौ मेरी तबियत घबरावै।

लोक शब्द लोक 'दर्शन' धतु से बना शब्द है, जिसका अर्थ है देखना। लोक ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को ही अथवा जिसकी उसकी कल्पना की हो, वेदो मे लोकशब्द इसी अर्थ मे प्राप्त होता है। यहाँ दृष्टव्य यह है कि उपनिषदो मे दो 'लोक' माने गये है– (1) इहलोक (2) परलोक। आधुनिक शब्द कोश मे 'लोक' के आठ अर्थ दिये गये है। जैसे जगत, स्थान, परदेश, दिशा, लोग, प्राणी, यश, समाज आदि सम पाताल और सम लोगो का वर्णन पुराण मे प्राप्त है। हिन्दी मे 'लोक' शब्द के लिए 'लोग' जिसका अर्थ है 'सामान्य जन'। लोक साहित्य के विशिष्ट अध्ययन हेतु 'लोक' शब्द के दो अर्थ विस्तार हुए है। (1) विश्व या समाज (2) सामान्य जन साहित्य। संस्कृति की विशेषता को प्रतिपादित काते समय 'लोक' के उक्त अर्थ से सहमत नही है। द्विवेदी जी ने जनपद के प्रथम अंक में स्पष्ट शब्दो मे लिखा है कि – ''लोक शब्द का अर्थ ग्राम्य नही है बल्कि नगरो और गाँवो मे फैली हुई समूची जनता है।''

डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय ने इस उपलक्ष्य मे कथन किया है कि ''जो लोग संस्कृत या परिष्कृत वर्ग से प्रभावित न होकर अपनी पुरातन स्थितियो मे ही रहते है वो लोक होतें है''7।

इसी प्रकार लोक शब्द की व्याप्ति को दृष्टिगत रखते हुए **डॉ0 पामार** ने अपने शब्दो मे लिखा है कि – ''लोक शब्द का प्रयोग गीत, कथासंगीत, साहित्य आदि से जुडकर साधरण जन समाज'' जिसमे पूर्व संचित भावनाएँ, विश्वास आदि सुरक्षित है और जिसमे भाषा शैलीगत सामग्री ही नही अन्य विषयो के अनगिनत रत्न छिपे होते है। ''8

'लोक' शब्द की इन व्याख्याओ को देखते हुए यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह शब्द उस विशेषण का वाचक है जो दूर संचार, सभ्यता, शिक्षा आदि से पूर्व आदिम मनोवृत्तियो के अवशेषों में समाहित है 'लोक' की सीमा उद्देश्य महत्व, प्रयोजनशीलता आदि को देखते हुए 'लोक' को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है–

''लोक' वह मनुष्य है जो अपनी परम्पराओ मे प्रचलित रीति– रिवाज, खनपान, रहन– सहन, लेन – देन और विश्वासो के प्रति आस्थाशील होने से अशिक्षित कहलाता है।''

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार।

2.डा0 सत्येन्द्र जी के अनुसार।

3.पं0 ओमकारनाथ ठाकुर के अनुसार।

4.डा0 राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार।

5.गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार।

6.आचार्य पं0 रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार।

7.डा0 कृष्ण देव उपाध्याय के अनुसार।

8.डा0 पामार के अनुसार।